पत्तों का दाग रोग

यह रोग बरसात के मौसम में प्रौढ़ पत्तों के दोनो तरफ भूरे धब्बों के रूप में होता है।

रोग का नियंत्रण करने के लिए 0.1% बैविस्टिन (कार्बेंडाजिम) का छिड़काव किया जाना चाहिए [एक बीघा शहतूत बगीचे के लिए 70 लीटर पानी में 28 चम्मच कार्बेंडाजिम मिलाया जाना चाहिए]।

सुरक्षित समय : 7 दिन।

पत्तों का मोर्चा रोग

यह रोग जाड़ों में विशेष तौर पर पहाड़ी इलाकों मे होता है जब पत्तों के दोनो सतहों पर मोर्चे के रंग की छोटे-बड़े धब्बे दिखाई पड़ते है और पत्तियां पीली पड़ कर जल्दी गिर जाती है।

रोग का नियंत्रण करने के लिए 0.1% बैविस्टिन (कार्बेंडाजिम) का छिड़काव किया जाना चाहिए [एक बीघा शहतूत बगीचे के लिए 70 लीटर पानी में 28 चम्मच कार्बेंडाजिम मिलाया जाना चाहिए]।

सुरक्षित समय : 7 दिन।

टुकरा

इस रोग का प्रकोप मार्च से अगस्त तक होता है। रोगकारक कीड़ों पर नियंत्रण पाने के लिए प्रकोप कम रहने पर रोगर (डाईमिथोएट) के 0.1% घोल एवं प्रकोप तेज रहने पर 0.2% घोल का छिड़काव करना चाहिए।

सुरक्षित समय : 14 दिन।

थ्रिप्स

फरवरी से जुलाई के बीच इनका प्रकोप होता है। थ्रिप्स के प्रकोप पर नियंत्रण पाने के लिए डाइमिथोएट के 0.1% घोल (जब थ्रिप्स की संख्या प्रति पत्ती 20 हो) या 0.2% घोल (जब संख्या 40 प्रति पत्ती से ज्यादा हो) का छिड़काव किया जाना चाहिए (एक बीघा शहतूत बगीचे के लीए 70 लीटर पानी में 220 मिली लीटर रोगर मिलाया जाना चाहिए)।

सुरक्षित समय : 14 दिन

सफेद मक्खी

जुलाई से नवम्बर के बीच इसका प्रकोप होता है। सफेद मक्खी के प्रकोप को नियंत्रण करने के लिए नुवान (डाईक्लोरोवास) के 0.1% घोल का छिड़काव किया जाना चाहिए [एक बीघा शहतूत बगीचे के लिए 70 लीटर पानी में 90 मिली लीटर चम्मच नुवान मिलाया जाना चाहिए]

मोरीजाइम-बी का छिड़काव

जाड़ों में (अक्तुबर-नवम्बर एवं जनवरी-फरवरी) शहतूत पौधों की वृद्धि कम हो जाती है। पत्तों की उत्पादकता बढ़ाने एवं गुणवत्ता सुधारने के लिए मोरीजाइम-बी का प्रथम छिड़काव पौधों की छँटाई की 25 दिन के बाद किया जाना चाहिए (0.1%), यानी एक लीटर में एक मिली लीटर)। दिन के शुरुआती घंटों मे छिड़काव करना अच्छा होता है।

मोरीजाइन-बी का दूसरा छिड़काव पौधों की छँटाई के 32वें दिन किया जाना चाहिए।

पत्तो या डालों का संग्रह

पौधों की छँटाई के 45वें से 65वें दिन के बीच रेशम कीटपालन पूरा होने तक पत्तियाँ तोड़ कर या डालों को काटकर पत्तों का संग्रह किया जा सकता है।

आदर्श शहतूत बगीचा

प्रकाशक : निदेशक, केंद्रीय रेशम उत्पादन अनुसंधान व प्रशिक्षण संस्थान, बहरमपुर - 742101; पश्चिम बंगाल
हिन्दी अनुवाद: डॉ: शिवनाथ, वैज्ञानिक सी
शब्द-संयोजन : संजीव कुमार नियोगी
संपादक : तापस कुमार मैत्र
Director, CSR&TI, Berhampore-742101, West Bengal

Pamphlet No. [illegible] July 2011

सिंचित क्षेत्रों के लिए शहतूत प्रजाति एस-1635

एम के घोष एवं बी बी बिन्दू

केंद्रीय रेशम उत्पादन अनुसंधान व प्रशिक्षण संस्थान
केन्द्रीय रेशम बोर्ड, वस्त्र मंत्रालय, भारत सरकार
बहरमपुर-742101 मुर्शिदाबाद, पश्चिम बंगाल।

एस-1635 शहतूत की एक लोकप्रिय प्रजाति है। इस प्रजाति का सर्वभारतीय स्तर पर व्यापक परीक्षण किया गया और कर्णाटक, आन्ध्रप्रदेश, तमिलनाडु, केरल तथा महाराष्ट्र के उच्च तापमान व सिंचित लाल तथा काली मिट्टी के लिए उपयुक्त पाया गया। यह मध्य प्र., पश्चिम बंगाल एवं असम की सिंचित परिस्थितियों में भी अच्छी तरह उगती है। यह 2001 से 2005 तक चलाई गई सर्व भारतीय शहतूत परीक्षण कार्यक्रम के अंतर्गत राष्ट्रीय नियंत्रक प्रजाति के तौर पर अधिकृत थी।

लक्षण

शाखाएँ : खड़ी, सीधी, हरे-भूरे रंग की।

पत्तियाँ : आरी की दाँतों की तरह कटे हुए किनारों के साथ खसखसी एवं गहरे हरे रंग की।

प्लाइडी स्तर : त्रिगुणित (3n=42)
कटिंग बचे रहने की दर : 80%
पौधों में शाखाओं की संख्या : 9.00
सबसे लंबे शाखा की लंबाई : 123.85 सेमी
शाखाओं की सम्मिलित लंबाई : 901.37 सेमी
गांठों की बीच की दूरी : 4.78 सेमी
पत्ते और तने का अनुपात : 0.54
एक पत्ती का क्षेत्रफल : 213.55 वर्ग सेमी
एक पत्ती का वजन : 4.33 ग्राम

उत्पादन क्षमता

पत्ती का उत्पादन : 44-45 मे. टन/ हे./ वर्ष (60X60 सेमी दूरी)

अप्रैल	जुलाई	सितम्बर	नवम्बर	फरवरी
9,940	11,290	10,347	7,510	5,710

एस-1 की तुलना में पत्ती उत्पादन में वृद्धि : 56.90%

पौष्टिकता का स्तर

पत्ती में नमी का भाग (%) : 79.58
06 घंटे बाद पत्ती में नमी पकड़कर रखने की क्षमता : 84.36
सर्करा का अंश (मिग्रा / ग्राम ताजी पत्ती के आधार पर) : 33.76
प्रोटीन (मिग्रा / ग्राम ताजी पत्ती के आधार पर) : 31.28

शहतूत की फसलों का समय

फसलों की संख्या : पाँच बार पत्तियों का पैदावार/ संग्रह।
शहतूत फसल की अवधि : पौधों की छँटाई के बाद 65-70 दिन।

पौधों की छँटाई के बाद अंकुर निकलने के लिए समय

अप्रैल	जुलाई	सितम्बर	नवम्बर	फरवरी
9	7	8	7	14

पौधों की छँटाई एवं अण्डों के प्रस्फुटन की तारीख (व्यवसायिक)

फसल	छँटाई की तारीख	रेशु कीटपालन के लिए पत्ती प्राप्त करने का समय	अण्डों के प्रस्फुटन की तारीख
चैत (जनु-फर)	पहली दिसम्बर	57	26वीं जनवरी
बैशाखी (मार्च-अप्रै)	20वीं फरवरी	30	28वीं मार्च
श्रावणी (जून-जुला)	11वीं मई	48	20वीं जून
आश्विना (अग-सित)	21वीं जुलाई	39	28वीं अगस्त
अग्रहायण (अक्टू-नव)	19वीं सितम्बर	12	31वीं अक्टूबर

कीटपालन क्षमता

3300-3700 रोग मुक्त चकत्ते/ हेक्टेयर/ वर्ष

जैव-खाद का प्रयोग

10 मेट्रिक टन प्रति हेक्टेयर की दर से वर्ष में दो बार गोबर की खाद वर्षा से पहले एवं वर्षा के बाद प्रयोग करें। खुदाई व जुताई करके मिट्टी में अच्छी तरह मिला दें एवं मेड़ और नाली बना दें। पौधों की छँटाई से तीसरे-चौथे दिन खाद का प्रयोग किया जा सकता है।

रसायनिक खाद का प्रयोग

पौधों की छँटाई के बाईसवें दिन रसायनिक खादों का नाइट्रोजन, फास्फेट और पोटास के रूप में 336:180:112 किलो ग्राम प्रति हेक्टेयर/ वर्ष की दर से प्रयोग करें।

जमीन की इकाई क्षेत्रफल	गोबर खाद की मात्रा (2 भागों में)	यूरिया की मात्रा (5 भागों में)	सिंगल सुपर फास्फेट की मात्रा (5 भागों में)	म्यूरेट आफ पोटाश की मात्रा (5 भागों में)
हेक्टेयर/ वर्ष	20 मे. टन	730 किग्रा	1125 किग्रा	186 किग्रा
मात्रा भाग	10 मे. टन	146 किग्रा	225 किग्रा	37.2 किग्रा
एकड़/ वर्ष	8 मे. टन	295 किग्रा	455 किग्रा	75.3 किग्रा
मात्रा भाग	4 मे. टन	59 किग्रा	91 किग्रा	15.06 किग्रा
बीघा/ वर्ष	2.661 मे. टन	97.33 किग्रा	150 किग्रा	24.8 किग्रा
मात्रा भाग	1.33 मे. टन	19.46 किग्रा	30 किग्रा	4.96 किग्रा
कट्ठा/ वर्ष	133.0 किग्रा	4.865 किग्रा	7.500 किग्रा	1.240 किग्रा
मात्रा भाग	66.5 किग्रा	0.972 किग्रा	1.500 किग्रा	0.248 किग्रा

सिंचाई

मेड़-नाली पद्धति द्वारा 7 से 10 दिन के अंतर पर 3.75 हेक्टेयर सेमी की दर से सिंचाई करें (प्रत्येक बार 85,000 गेलन प्रति हेक्टेयर की दर से पानी दें)।

प्रथम सिंचाई पौधों की छँटाई के बाद छठवें दिन बाद करें। दूसरी, तीसरी, चौथी, पाँचवी और छठी सिंचाई पौधों की छँटाई के बाद 15वें, 22वें, 34वें, 44वें और 55वें दिन करें।

कमजोर शाखाओं का निष्कासन

पौधों की छँटाई के समय कमजोर शाखाओं को काटकर निकाल दें।

पौधों के संरक्षण के उपाय

रोग एवं हानिकारक कीटों के प्रकोप के अनुसार छत्राक एवं कीटनाशकों का प्रयोग करें।

पत्तों का सफेद चूर्णी रोग

यह रोग जाड़ों में होता है। पत्तों के निचली सतह पर सफेद रंग का कवक स्पोर का स्तर दिखाई पड़ता है। रोग का नियंत्रण करने के लिए बैविस्टिन (कार्बेन्डाजिम) की 0.13% घोल का छिड़काव किया जाना चाहिए [एक बीघा शहतूत बगीचे के लिए 70 लीटर पानी में 42 ग्राम कार्बेन्डाजिम मिलाया जाना चाहिए]।

सुरक्षित समय : 7 दिन।